Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MRDE-201

ग्रामीण सामाजिक विकास

(Rural Social Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

ग्रामीण सामाजिक विकास
(Rural Social Development)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड-1 : सामाजिक विकास (Social Development)

1. सामाजिक विकास : अवधारणाओं और सिद्धांतों 1
(Social Development: Concepts and Theories)

2. कारकों और संकेतक का सामाजिक विकास 9
(Factors and Indicators of Social Development)

3. ग्रामीण सामाजिक विकास : सामाजिक नीतियाँ और सामाजिक सुरक्षा 16
(Rural Social Development: Social Policies and Social Securities)

4. ग्रामीण सामाजिक विकास : प्रकृति और कार्यक्षेत्र 25
(Rural Social Development: Nature and Scope)

खण्ड-2 : ग्रामीण महिलाओं का विकास (Development of Rural Women)

5. ग्रामीण महिलाओं की स्थिति 36
(Status of Rural Women)

6. ग्रामीण महिलाएँ : स्वास्थ्य और पोषण 44
(Rural Women: Health and Nutrition)

7. ग्रामीण महिलाएँ : शिक्षा और प्रशिक्षण 52
(Rural Women: Education and Training)

8. महिलाओं के लिए नीतियाँ, कार्यक्रम और कानून 63
(Policies, Programmes and Legislation for Women)

खण्ड-3 : ग्रामीण बच्चों का विकास (Development of Rural Children)

9. ग्रामीण बच्चों की स्थिति 73
(Status of Rural Children)

10. ग्रामीण बच्चे : स्वास्थ्य और पोषण 81
(Rural Children: Health and Nutrition)

11. ग्रामीण बच्चों की शिक्षा 90
(Education of Rural Children)

12. बच्चों के लिए नीतियां, कार्यक्रम और कानून 98
(Policies, Programmes and Legislation for Children)

खण्ड-4 : अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और वंचित विशेषाधिकार प्राप्त समूहों का विकास (Development of SCs, STs and other Disadvantaged Groups)

13. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का विकास 108
(Development of Scheduled Castes and Scheduled Tribes)

14. भूमिहीन मजदूर और बंधुआ मजदूर 122
(Landless Labourers and Bonded Labour)

15. कारीगरों और अन्य पिछड़े वर्गों का विकास 133
(Development of Artisans and other Backward Classes)

16. ग्रामीण क्षेत्रों में बुढ़ापा और अलग तरह से सक्षम 143
(Ageing and Differently Abled in Rural Areas)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

ग्रामीण सामाजिक विकास

(Rural Social Development)

MRDE-201

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. सामाजिक विकास से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 1

अथवा

भारत में सामाजिक सुरक्षा पहलों के बारे में विस्तार से बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, प्रश्न 5

प्रश्न 2. भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-38, प्रश्न 1

अथवा

कौशल और उद्यमिता के विकास में एनजीओ की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-60, प्रश्न 7

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अनुसूचित जनजातियों के लिए बुनियादी ढाँचे की व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-119, प्रश्न 8

(ख) ग्रामोद्योग से सम्बन्धित सुधारात्मक उपायों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-141, 'अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न'

(ग) बढ़ती जनसंख्या की चुनौतियों पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-148, प्रश्न 4

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) बंधुआ बाल मजदूरी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-75, 'बंधुआ बाल श्रम'

(ख) समुदाय आधारित पुनर्वास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-145, 'समुदाय आधारित पुर्वास'

(ग) शिक्षा का अधिकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-94, प्रश्न 4

(घ) सामाजिक विकास के आयाम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2

(ङ) सामाजिक विकास की वृद्धि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-26, 'सामाजिक विकास का विकास'

(च) सामाजिक विकास का स्तर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'सामाजिक विकास का स्तर'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सामाजिक संकेतक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'सामाजिक संकेतक'

(ख) लैंगिक असमानता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-27, 'लैंगिक असमानता'

(ग) स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-27, 'स्वास्थ्य और स्वच्छता'

(घ) अल्प विकास

उत्तर–अल्प विकास से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जहां किसी क्षेत्र या देश में अन्य क्षेत्रों या देशों की तुलना में पर्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास का अभाव होता है। यह अक्सर जीवन स्तर, उत्पादकता और आय के निम्न स्तर की विशेषता होती है। अल्प विकास ऐतिहासिक, संस्थागत या संरचनात्मक मुद्दों सहित विभिन्न कारकों के कारण हो सकता है।

अविकसित क्षेत्रों में आमतौर पर अधिक विकसित क्षेत्रों की तुलना में जीवन स्तर कम होता है, जिसमें व्यापक गरीबी, कम साक्षरता दर और कम जीवन प्रत्याशा जैसी समस्याएं शामिल हैं।

अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादकता का स्तर प्राय: कम होता है, जिसके कारण प्रौद्योगिकी तक पहुँच का अभाव, सीमित बुनियादी ढाँचा तथा कृषि जैसी प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों पर निर्भरता जैसे कारक होते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अल्प विकास की पहचान असमान व्यापार संबंधों, सीमित पूँजी निवेश और विविध उद्योगों की कमी से होती है, जिसके कारण वैश्विक स्तर पर आर्थिक असमानताएं पैदा होती हैं।

अल्प विकास के कारण अक्सर देश में आय संबंधी असमानताएं पैदा हो जाती हैं, जहां जनसंख्या का एक छोटा हिस्सा धन के अनुपातहीन हिस्से पर नियंत्रण रखता है।

औपनिवेशिक इतिहास, राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष कुछ क्षेत्रों में अविकसितता के बने रहने में योगदान दे सकते हैं।

संक्षेप में, अल्प विकास से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जहां एक क्षेत्र या देश दूसरों की तुलना में अपनी समग्र प्रगति में पीछे रह जाता है, जो प्राय: आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध के कारण होता है।

(ङ) सामाजिक अवसर

उत्तर–सामाजिक अवसर व्यक्तियों के लिए दूसरों के साथ जुड़ने और उनके साथ संबंध बनाने, समूह गतिविधियों में भाग लेने और आमतौर पर सामाजिक संपर्क का अनुभव करने के अवसरों को संदर्भित करते हैं। ये अवसर आकस्मिक बातचीत से लेकर क्लबों में शामिल होने या स्वयंसेवा करने जैसी अधिक संरचित गतिविधियों तक हो सकते हैं।

सामाजिक अवसरों के उदाहरण हैं–

साझा रुचियों, सामाजिक कार्यक्रमों या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से लोगों से मिलना। लगातार बातचीत और आपसी सहयोग के माध्यम से मौजूदा संबंधों को पोषित करना और नए संबंधों को बढ़ावा देना। टीम खेलों में भाग लेना, क्लबों या संगठनों में शामिल होना या समुदाय में स्वयंसेवा करना। विविध पृष्ठभूमि और अनुभव वाले लोगों से जुड़ना, दृष्टिकोण को व्यापक बनाना और नए अवसरों तक पहुँचना। सामाजिक संपर्क का अनुभव करने और विभिन्न सामाजिक गतिशीलता का अवलोकन करने के लिए कैफे, पार्क या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर जाना।

सामाजिक सम्पर्क सूचना, कौशल और अन्य संसाधनों तक पहुँच को सुगम बना सकते हैं जो व्यक्तिगत या व्यावसायिक विकास को बढ़ा सकते हैं। विविध पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ बातचीत करने से व्यक्ति को नए विचारों, दृष्टिकोणों और सांस्कृतिक प्रथाओं से परिचित होने का अवसर मिलता है, जिससे उनका जीवन समृद्ध होता है। मजबूत सामाजिक नेटवर्क शैक्षिक और कैरियर पथ पर आगे बढ़ने में सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं, जिससे उन्नति की संभावना बढ़ जाती है।

(च) विकास का अधिकार

उत्तर–विकास का अधिकार एक मानव अधिकार है, जिसे विकास के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र में मान्यता दी गई है, जो यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति और लोगों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास में भाग लेने, योगदान करने और उसका आनंद लेने का अधिकार है। यह अधिकार सभी को लाभ पहुँचाने के लिए विकास की आवश्यकता पर जोर देता है और सक्रिय, स्वतंत्र और सार्थक भागीदारी के साथ-साथ लाभों के उचित वितरण पर आधारित है।

विकास के अधिकार को मानवाधिकार का एक अंतर्निहित और मौलिक पहलू माना जाता है, न कि राज्यों द्वारा दिया गया विशेषाधिकार।

यह विकास प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी, समाज के विकास में योगदान और सकारात्मक परिणामों से लाभ उठाने के महत्त्व पर जोर देता है। यह अधिकार आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास को सम्मिलित करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि प्रगति व्यापक और समावेशी हो।

यह समाज के सभी सदस्यों, जिनमें सबसे कमजोर और हाशिए पर पड़े लोग भी शामिल हैं, के बीच विकास के लाभों को समान रूप से साझा करने की आवश्यकता पर बल देता है। विकास के अधिकार को अक्सर विकास पहलों के लिए एक रूपरेखा के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि विकास को मानव अधिकारों का सम्मान, संरक्षण और संवर्धन करना चाहिए। इस अधिकार का उद्देश्य व्यक्तियों और लोगों को सशक्त बनाना, अनुकूल वातावरण बनाना तथा विकास को सुगम बनाने के लिए सभी स्तरों पर सुशासन को बढ़ावा देना है। विकास का अधिकार प्रगति में आने वाली बाधाओं, जैसे विदेशी प्रभुत्व, भेदभाव और मानवाधिकारों के उल्लंघन की पहचान करता है तथा उनके उन्मूलन का आह्वान करता है

(छ) विकलांगता क्षेत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-145, 'विगलांगता क्षेत्र'

(ज) भूमिहीन श्रम।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-126, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ग्रामीण सामाजिक विकास
(Rural Social Development)

सामाजिक विकास : अवधारणाओं और सिद्धांतों
(Social Development: Concepts and Theories)

1

परिचय

अमर्त्य सेन (1995) का मानना है कि सामाजिक विकास अवसरों की समानता है। विकासशील देश समकालीन समय में विकास को एक अपरिहार्य लक्ष्य के रूप में देखते हैं क्योंकि वे विकसित देशों के साथ चलने का प्रयास कर रहे हैं। विकास स्थान समयानुसार बदलता रहता है। विकास को दीर्घकाल तक सकल घरेलू उत्पाद एवं सकल राष्ट्रीय उत्पाद के रूप में देखा जाता है। संयुक्त राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थान सामाजिक विकास को विकास की समग्र संकल्पना का एक अनिवार्य पहलू मानते हैं। यह व्यापक स्तर पर व्यक्ति एवं समाज के संपूर्ण विकास के आधार पर कार्य करता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

'सामाजिक विकास' की संकल्पना

गुन्नार मिर्डल (1974) का मानना है कि विकास से मतलब संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का ऊपर की ओर बढ़ना है और यह सामाजिक व्यवस्था तथाकथित आर्थिक कारकों के अलावा, लोगों के विभिन्न समूहों द्वारा सभी प्रकार की उपभोग, खपत सहित सभी गैर-आर्थिक कारकों को शामिल करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, "सामाजिक विकास है–मानवीय पहलू, आय में वृद्धि, सामग्रियों का न्यायसंगत वितरण, समावेशी विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने के लिए संरचनात्मक परिवर्तन आदि।"

संयुक्त राष्ट्र ने सामाजिक विकास हेतु एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार किसी को भी सामाजिक विकास के क्षेत्र से बाहर नहीं रहना चाहिए। सामाजिक विकास असमानता को कम करने पर बल देता है तथा समतावादी समाज की मांग करता है। भारत के प्रसिद्ध समाजशास्त्री और समाज कार्य वैज्ञानिक एम.एस. गोरे ने सामाजिक विकास को 'समाज के सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की समग्रता लाने की प्रक्रिया' के रूप में परिभाषित किया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक विकास लाने के लिए संरचनात्मक बदलाव की भी जरूरत है। हालांकि सामाजिक विज्ञान में सामाजिक विकास की संकल्पना ने एक विस्तृत अर्थ प्राप्त किया है, जिसमें समाज के समस्त वर्गों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आयामों में विकास के समन्वय की मांग की गई है। इस प्रकार सामाजिक विकास एक साथ दो लक्ष्यों-सर्वांगीण विकास तथा समतावादी समाज के लिए बदलाव की खोज करता है।

सामाजिक विकास : सैद्धांतिक निरूपण

मिडगली (1995) का मानना है कि सामाजिक विकास 1950 के दशक में विकास अध्ययन के एक विशिष्ट उप-क्षेत्र के रूप में प्रकट हुआ। यद्यपि सामाजिक विकास की उत्पत्ति को एशिया एवं अफ्रीकी महाद्वीपों के नए स्वतंत्र देशों में स्थानीय रूप से किए जा रहे विकास कार्यक्रमों के रूप में देखा जा सकता है। पार्थ चटर्जी का विचार है कि सामाजिक विकास आर्थिक विकास के साथ होना चाहिए क्योंकि विकास का अंतिम लक्ष्य सभी का कल्याण करना है। ग्रामीण भारत में सामाजिक विकास के सैद्धांतिक सूत्रीकरण अक्सर आधुनिकीकरण सिद्धांत और निर्भरता सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित करते हैं तथा आजीविका में सुधार और असमानताओं को दूर करने के लिए आर्थिक, सामाजिक और अवसंरचनात्मक पहलुओं को शामिल करते हुए समग्र विकास की आवश्यकता पर बल देते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में आधुनिकीकरण सिद्धांत उभरा। आधुनिकीकरण सिद्धांत मानता है कि पारंपरिक समाज औद्योगीकरण, शहरीकरण और आर्थिक विकास के माध्यम से आधुनिक अवस्था में पहुँच सकते हैं, लेकिन इसके लिए अक्सर पश्चिमी मॉडलों से प्रेरणा लेनी होगी। रोस्टो ने आधुनिकीकरण सिद्धांत को पाँच चरणों–टेकऑफ प्रक्रिया, टेकऑफ के लिए पूर्व शर्त, परंपरागत समाज, परिपक्वता के लिए संचालन तथा व्यापक स्तर पर खपत समाज में विभाजित किया है।

1950 के दशक में निर्भरता सिद्धांत नव-मार्क्सवादी सिद्धांत एवं कीन्स के आर्थिक सिद्धांत के विचारों के संयोजन के फलस्वरूप उभरा। इस सिद्धांत का तर्क है कि विकासशील देशों का अक्सर विकसित देशों द्वारा शोषण किया जाता है, जिससे निर्भरता का चक्र निर्मित होता है और उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न होती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आंद्रे गुंडर फ्रैंक (1967) का मानना है कि अल्पविकास एक ऐसी स्थिति थी, जो प्रतिगमन की एक सतत प्रक्रिया की विशेषता थी। आधुनिकीकरण के पश्चिमी मॉडल की कल्पना जीडीपी के संदर्भ की गई है, इसलिए यह मॉडल आर्थिक विकास को शामिल करने वाले सामाजिक विकास पर बल देता है।

सामाजिक विकास को समझना–दृष्टिकोण और परिभाषाएं

मिडगली ने अपने हाल के काम में सामाजिक विकास को एक गतिशील बहुआयामी प्रक्रिया के संदर्भ में समग्र जनसंख्या के कल्याण हेतु डिजाइन किए गए नियोजित सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया बताया है। मिडगली लिखते हैं कि मिरडाल ने सामाजिक विकास के लिए सांख्यिकीवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जिसे एकीकृत सामाजिक-आर्थिक नियोजन दृष्टिकोण कहा जाता है। एक दूसरा उदार अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण सामाजिक विकास प्राप्त करने हेतु बाजार के महत्त्व पर बल देता है। 'सामाजिक और सामुदायिक विकास अभ्यास (2014)' नामक पवार की पुस्तक में सामाजिक विकास के कुछ दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया है, जो इस प्रकार हैं–

1. आर्थिक विकास के साथ समावेशी के रूप में व्यवस्थित योजना के रूप में सामाजिक विकास–मिडगली आर्थिक विकास के साथ संयोजन के रूप में सामाजिक विकास को संपूर्ण आबादी के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किए गए नियोजित सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया मानता है।

2. संरचनात्मक परिवर्तन के रूप में सामाजिक विकास–संरचनात्मक परिवर्तन को सामाजिक विकास की एक विस्तृत अवधारणा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसका अभिप्राय है-सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समाज को बदलने हेतु जानबूझकर किया गया संरचनात्मक परिवर्तन।

3. विकास के मानवीय पहलू के रूप में सामाजिक विकास–सामाजिक विकास, विकास के मानवीय पहलू को दर्शाता है। पाइवा सामाजिक विकास की प्रक्रिया के दो आयामों को दर्शाता है-लोगों की अपनी भलाई और समाज की भलाई के लिए निरंतर काम करने की क्षमता तथा समाज के संस्थानों का विकास। अत: सामाजिक विकास, विकास की एक विस्तृत प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक पहलू, संरचनात्मक परिवर्तन तथा इसके क्षेत्र में मानवीय पहलू शामिल हैं।

सामाजिक विकास की विशेषताएं और आयाम

जेम्स मिडगली (1995) सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तीन चरणों में विभाजित करता है–"सबसे पहले, पहले से मौजूद सामाजिक स्थिति से संबंधित है, जिसे सामाजिक विकास बदलना चाहता है। दूसरा, सामाजिक विकास प्रक्रिया से ही संबंधित है। अंत में, राज्य या लक्ष्य है, जिसे सामाजिक विकास प्रक्रिया प्राप्त करना चाहती है। मिडगली के अनुसार सामाजिक विकास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

1. सामाजिक विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न आयाम शामिल हैं।

2. सामाजिक विकास प्रगतिशील है क्योंकि यह मौजूदा सामाजिक स्थिति को सुधारता है।

3. सामाजिक विकास स्वयं में सार्वभौमिक है क्योंकि इसका लक्ष्य संपूर्ण आबादी के कल्याण को बढ़ावा देना है तथा उन बाधाओं को दूर करना है, जो विकास प्रक्रिया में रुकावट बनती हैं।

4. सामाजिक विकास आर्थिक विकास का पूरक है क्योंकि इसका उद्देश्य सर्वांगीण विकास हासिल करना है।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर सामाजिक विकास के कुछ आयाम भी हैं। सामाजिक विकास, विकास को समावेशी बनाना चाहता है। इसकी नैतिक जिम्मेदारी की भावना सामाजिक विकास के आयाम के साथ जुड़ी हुई है। यह समाज के सदस्यों के बीच असमानता को दूर कर समावेशी समाज पर बल देता है। इसका उद्देश्य लोगों को उनके पर्यावरणीय वातावरण के साथ जोड़कर समाज के रचनात्मक एवं सांस्कृतिक लोकाचार को बढ़ाता है। अत: सामाजिक विकास अपने सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक आयामों के साथ सामाजिक विकास की समग्र स्थिति में सुधार करना चाहता है।

सामाजिक विकास–सुविधा प्रदाता और चुनौतियां

सामाजिक विकास के अनेक पहलू हैं, जो वास्तविक जीवन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सामाजिक विकास ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न घटनाएं इसके कारक के रूप में कार्य करती हैं। इनमें शामिल हैं-शिक्षा के प्रसार एवं जन जागरूकता में वृद्धि तथा राजनीतिक नेतृत्व का दृढ़ संकल्प। इसमें समाज का एक सकारात्मक बदलाव सामाजिक विकास प्रक्रिया में सहायता करता है। सामाजिक विकास में लोगों के मध्य व्यापक चुनौती अज्ञानता एवं निरक्षरता मानी गई है। इसके अतिरिक्त सकारात्मक बदलाव हेतु राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव इसकी गति को पूर्णत: रोक देता है। समाज में भाषा, जाति, वर्ग, लैंगिक भेदभाव आदि कारक सामाजिक विकास को अवरुद्ध करते हैं।

भारतीय संदर्भ में सामाजिक विकास

विविधता में एकता का प्रतीक भारत के लिए सामाजिक विकास की बहुत प्रासंगिकता है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारत एक प्राचीन सभ्यता है, इस भूमि को पोषित करने वाली परंपराएं और रीति-रिवाज धीरे-धीरे विकसित होते हुए कई पीढ़ियों तक चले गए हैं। महात्मा गांधी की रचनात्मक कार्यक्रम की पहल में सामाजिक-आर्थिक विकास का मंत्र था। भारत का सामाजिक-आर्थिक विकास गांधीजी के 'तावीज' के अनुसार सबसे बड़ी समस्याओं का समाधान करने का एक मार्गदर्शक बन गया। तावीज समाज के सबसे निर्धन एवं सबसे कमजोर व्यक्ति के चेहरे को दर्शाने का सुझाव देता है। आजादी की पूर्व संध्या पर संविधान सभा में अपने संबोधन में नेहरूजी ने कहा था कि "भारत की सेवा का अर्थ गरीबी, अज्ञानता, बीमारी एवं अवसर की असमानता का अंत है।"

अमर्त्य सेन (2001) के कल्याणकारी अर्थशास्त्र में मौलिक योगदानों में सामाजिक विकास प्रक्रिया के लिए एक और प्रोत्साहन प्रमुख रूप से प्रकट हुआ, जिसने आर्थिक चुनौतियों के क्षेत्र में मानवीय एवं नैतिक विचारों पर बल दिया। सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में मानव सबसे महत्त्वपूर्ण अभिकर्ता है। पंचवर्षीय योजनाओं में सामाजिक विकास को नवीन जोश के साथ दर्शाया गया है। भारत ने 2019 में यूएनडीपी के मानव विकास सूचकांक में 129वां स्थान प्राप्त किया तथा 2020 में 189 देशों में से 131वें स्थान तक पहुँच पाया। ग्रामीण विकास को सामाजिक विकास का एक प्रमुख उद्देश्य तथा आंतरिक लक्ष्य माना गया है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. सामाजिक विकास से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताएं बताइए।

उत्तर–सामाजिक विकास शब्द उस समय चर्चा में आया, जब यह महसूस किया गया कि सही मायनों में विकास केवल आर्थिक उन्नति के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और इसके लिए एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण की तत्काल आवश्यकता है। सामाजिक विकास का पहला प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी के पचास के दशक में संयुक्त राष्ट्र की विश्व स्थिति पर रिपोर्ट में सामाजिक विकास को विकास की समस्या के लिए रामबाण के रूप में पहचाना गया था। भारत में सामाजिक विकास शब्द का पहली बार प्रयोग भारतीय समाज कल्याण परिषद में वर्ष 1973 में किया गया था।

अवधारणा–सामाजिक विकास को आमतौर पर समानता और सामाजिक न्याय सहित उद्देश्यों के एक समूह के रूप में समझा जाता है, जिसमें सामाजिक समावेशन, स्थायी आजीविका, लैंगिक समानता, बढ़ी हुई आवाज और भागीदारी सहित अतिरिक्त उद्देश्य शामिल होते हैं। सामाजिक विकास सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, न कि केवल कुछ विशिष्ट परिणामों के लिए स्थापित नीतियों और कार्यक्रमों का एक समूह।

सामाजिक विकास को निम्नलिखित को बढ़ाने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है–

1. व्यक्तियों की संपत्ति और उनकी भलाई में सुधार करने की क्षमता।
2. सामाजिक समूहों की एजेंसी का प्रयोग करने की क्षमता, अन्य समूहों के साथ अपने संबंधों को बदलना।
3. विकास प्रक्रियाओं में भाग लेना।
4. समाज की अपने घटक तत्वों के हितों को समेटने की क्षमता।
5. शांतिपूर्वक खुद को नियंत्रित करना।
6. परिवर्तन का प्रबंधन करना।

परिभाषा–गुन्नार मिर्डल ने सामाजिक विकास को "संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की ऊपर की ओर गति" के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विकास एक समग्र प्रक्रिया है, जिसमें केवल आर्थिक वृद्धि ही नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और संस्थागत सुधार भी शामिल हैं।" मिर्डल ने विकास को केवल आर्थिक वृद्धि के रूप में देखने से इनकार कर दिया तथा तर्क दिया कि इसमें जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक सुविधाओं सहित समाज के सभी पहलुओं में सुधार शामिल होना चाहिए।

जॉन ने कहा, "सामाजिक विकास एक योजनाबद्ध संस्थागत परिवर्तन की प्रक्रिया है, जो एक ओर मानवीय आवश्यकता और दूसरी ओर सामाजिक नीतियों और कार्यक्रमों के बीच बेहतर पत्राचार लाती है।"

देवी लिखती हैं, "सामाजिक विकास एक व्यापक अवधारणा है, जिसका तात्पर्य प्रमुख संरचनात्मक परिवर्तनों-राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक से है, जिन्हें समाज को बदलने के लिए जानबूझकर की गई कार्रवाई के एक भाग के रूप में पेश किया जाता है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ इस बात पर प्रकाश डालता है कि सामाजिक विकास की पहचान सामाजिक प्रणाली, सामाजिक संरचना, संस्थानों, सेवाओं और नीतियों की जीवन स्तर में अनुकूल परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए संसाधनों का उपयोग करने की अधिक क्षमता से होती है।

जेम्स मिडगली की दो मौलिक कृतियाँ, 'सामाजिक विकास–सामाजिक कल्याण में विकासात्मक परिप्रेक्ष्य' (1995) और 'सामाजिक विकास : सिद्धांत और व्यवहार' (2014), सामाजिक विकास की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं पर चर्चा करती हैं तथा लोगों के कल्याण में सुधार लाने और व्यापक विकास के लिए सामाजिक और आर्थिक नीतियों को एकीकृत करने में इसकी भूमिका पर बल देती हैं।

सामाजिक विकास की विशेषताएँ–सामाजिक विकास की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. सामाजिक विकास, सामाजिक कल्याण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गतिशील विकास प्रक्रिया के भीतर आर्थिक और सामाजिक नीतियों को एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देता है।
2. सामाजिक विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना है, जैसा कि आय, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और जीवन प्रत्याशा में सुधार से स्पष्ट होता है।
3. सामाजिक विकास व्यापक सामाजिक कल्याण के महत्त्व को स्वीकार करता है, जिसमें लोगों के जीवन के विभिन्न पहलू, जैसे–स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास और सामाजिक सुरक्षा शामिल होते हैं।
4. सामाजिक विकास के लिए अंत:विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों से अंतर्दृष्टि को एक साथ लाया जाता है।
5. सामाजिक विकास का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सामाजिक कार्यक्रम और सेवाएं समाज के सभी सदस्यों के लिए सुलभ हों, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या परिस्थितियां कुछ भी हों।
6. सामाजिक विकास का अंतिम लक्ष्य समस्त लोगों का कल्याण है। जब तक लोगों को सामाजिक कल्याण की गारंटी प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक विकास अधूरा माना जाता है।
7. सामाजिक विकास मानव जीवन के लिए बेहतर सामाजिक परिस्थिति प्रदान करने, लोगों की गरिमा की रक्षा करने और सामाजिक न्याय के लिए है।
8. सामाजिक विकास आर्थिक विकास का पूरक माना जाता है क्योंकि इसका उद्देश्य सर्वांगीण विकास प्राप्त करना है।
9. सामाजिक विकास संपूर्ण विकास का एक साधन है क्योंकि यह लोगों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है, ताकि वे स्वयं अपना भविष्य तय कर सकें।

प्रश्न 2. सामाजिक विकास के प्रमुख आयामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–सामाजिक विकास में विभिन्न परस्पर जुड़े आयाम शामिल हैं, जिनका उद्देश्य व्यक्तियों और समाज की भलाई में सुधार करना है, जिसमें आर्थिक अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, सामाजिक समावेशन और पर्यावरणीय स्थिरता शामिल हैं। सामाजिक विकास के मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं–

1. आर्थिक विकास और अवसर–सामाजिक विकास का उद्देश्य एक मजबूत अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है, जो सभी के लिए रोजगार के अवसर और सभ्य जीवन स्तर प्रदान करे। भूमि, पूँजी और प्रौद्योगिकी सहित संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना आर्थिक सशक्तिकरण के लिए महत्त्वपूर्ण है।

2. समावेशी विकास–विकास प्रयासों को समावेशी विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आर्थिक प्रगति का लाभ कमजोर आबादी सहित सभी को मिले। सामाजिक विकास का उद्देश्य लिंग, जातीयता, धर्म, विकलांगता और

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अन्य कारकों पर आधारित असमानताओं को कम करना है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी व्यक्तियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में आवाज और भागीदारी मिले, जो उनके जीवन को प्रभावित करती है। सामाजिक विकास में कमजोर समूहों, जैसे–बच्चों, बुजुर्गों और विकलांग लोगों की आवश्यकताओं और अधिकारों को प्राथमिकता दी जाती है।

3. नैतिक जिम्मेदारी–नैतिक जिम्मेदारी सामाजिक विकास के आयामों से आंतरिक रूप से जुड़ी हुई है क्योंकि इसमें सामाजिक संदर्भ में नैतिक रूप से समझना और कार्य करना, जवाबदेही की भावना को बढ़ावा देना और न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज में योगदान देना शामिल है। नैतिक जिम्मेदारी, जिसमें सही और गलत को समझना और उसके अनुसार कार्य करना शामिल है, एक कार्यशील और संपन्न समाज की आधारशिला है। नैतिक जिम्मेदारी के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति और समूह अपने कार्यों और दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जवाबदेह हों, जिससे समाज में निष्पक्षता और न्याय को बढ़ावा मिले। नैतिक जिम्मेदारी इस बात तक फैली हुई है कि हम दूसरों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं तथा सहानुभूति, सम्मान और सहयोग पर जोर देते हैं, जो मजबूत सामाजिक बंधन बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। नैतिक जिम्मेदारी की प्रबल भावना हमें अन्याय को चुनौती देने तथा सभी के लिए अधिक समतापूर्ण समाज बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। नैतिक जिम्मेदारी व्यक्तियों को सामूहिक कार्रवाई और सामाजिक परिवर्तन में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकती है तथा समग्र रूप से समुदाय और समाज के लिए सकारात्मक परिणाम की दिशा में काम कर सकती है।

4. शिक्षा और मानव पूंजी–सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों में निवेश से रोजगार क्षमता और आर्थिक अवसर बढ़ सकते हैं। बदलते आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य के अनुकूल ढलने के लिए आजीवन शिक्षा और सतत व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण है।

5. स्वास्थ्य और कल्याण–स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए निवारक देखभाल और उपचार सहित गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। सामाजिक विकास पहल पोषण, शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सहित स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा दे सकती है। स्वास्थ्य असमानताओं को दूर करने तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी लोगों को आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध हो, लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

6. पर्यावरणीय स्थिरता–सामाजिक विकास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और टिकाऊ पर्यावरणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने के महत्त्व को पहचानता है। जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटना दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण है। हरित प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ प्रथाओं में निवेश करने से अधिक पर्यावरण अनुकूल और लचीले समाज का निर्माण करने में मदद मिल सकती है।

7. शासन और सुरक्षा–सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए स्थिर और पूर्वानुमानित वातावरण बनाने के लिए सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना आवश्यक है। कानून का शासन सुनिश्चित करना और मानवाधिकारों की सुरक्षा एक न्यायपूर्ण एवं समतापूर्ण समाज के लिए मौलिक है। सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए शांतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण बनाना आवश्यक है।

प्रश्न 3. ग्रामीण भारत में सामाजिक विकास का सैद्धांतिक सूत्रीकरण क्या है?

उत्तर–ग्रामीण भारत में सामाजिक विकास के सैद्धांतिक सूत्रीकरण में आधुनिकीकरण सिद्धांत, निर्भरता सिद्धांत और मार्क्सवादी दृष्टिकोण सहित विभिन्न दृष्टिकोण शामिल हैं, जो गरीबी, असमानता और संसाधनों तक पहुँच जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए समग्र, समावेशी और सतत विकास की आवश्यकता पर बल देते हैं।

1. आधुनिकीकरण सिद्धांत–यह सिद्धांत बताता है कि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास विकास के पश्चिमी मॉडल को अपनाकर किया जा सकता है, जिसमें औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति पर जोर दिया जाएगा। हालांकि आलोचकों का तर्क है कि इस दृष्टिकोण से संसाधनों का दोहन हो सकता है और स्थानीय समुदायों को हाशिए पर धकेला जा सकता है।

आधुनिकीकरण सिद्धांत एक अमेरिकी समाजशास्त्रीय सिद्धांत है। इसकी कई पुनरावृत्तियाँ हैं, लेकिन मूल अवधारणा यह है कि हर समाज प्रगति के चरणों से गुजरेगा, जब तक कि वे एक आदर्श अवस्था तक नहीं पहुँच जाते। आधुनिकीकरण सिद्धांत का पालन करने वाले राष्ट्र का एक उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका है, जिस पर यह सिद्धांत आधारित है। औद्योगीकरण के आगमन और विकास के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका कमोबेश पूंजीवाद, पश्चिमी सामाजिक संरचना और कल्याण कार्यक्रमों के प्रति प्रतिबद्ध हो गया, ताकि आर्थिक सहायता की जरूरत वाले लोगों की मदद की जा सके।

आधुनिकीकरण सिद्धांत को समाजशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो बताता है कि समाज अपने अस्तित्व के दौरान अनिवार्य रूप से सकारात्मक, प्रगतिशील तरीकों से बदल जाएगा। आधुनिकीकरण का मुख्यधारा समाजशास्त्रीय मॉडल मानता है कि पश्चिमी पूंजीवादी समाज आधुनिकीकरण के लिए मॉडल प्रदान करते हैं। हालांकि कुछ सिद्धांत, जैसे कि मार्क्सवादी, आधुनिकीकरण, पश्चिमी समाजों या पूंजीवाद को लक्ष्य के रूप में उपयोग नहीं करते हैं। आधुनिकीकरण के विभिन्न सिद्धांतों की कड़ी आलोचना की गई है, जैसा कि आधुनिकीकरण की सामान्य अवधारणा की है। कई समाजशास्त्रियों, जिनमें से अधिकांश ने संयुक्त राज्य अमेरिका में अध्ययन किया, ने आधुनिकीकरण सिद्धांत के निर्माण में योगदान दिया। यह अभी भी समाजशास्त्र में एक व्यापक और शक्तिशाली अवधारणा है।

आधुनिकीकरण सिद्धांत की सामान्य संरचना यह बताती है कि सभी समाज समय के साथ एक चरण से दूसरे चरण तक प्रगति करते हैं। सभी समाजों का अंतिम लक्ष्य आधुनिक या उत्तर-आधुनिक समाज बनना होगा। विकासशील चरणों में पारंपरिक समाज (कृषि या बागवानी समाज), टेक-ऑफ (औद्योगीकरण) और परिपक्वता (प्रौद्योगिकी उपयोग और उत्पादन में वृद्धि) शामिल हैं।

अमेरिकी समाजशास्त्री डब्ल्यू.डब्ल्यू. रोस्टो द्वारा सूचीबद्ध आधुनिकीकरण सिद्धांत के बुनियादी चरण हैं–पारंपरिक समाज, टेक-ऑफ, परिपक्वता, तथा बड़े पैमाने पर उपभोग और बड़े पैमाने पर उत्पादन।

निर्भरता सिद्धांत–यह सिद्धांत यह मानता है कि ग्रामीण क्षेत्र अक्सर शक्तिशाली बाहरी ताकतों (जैसे–वैश्विक बाजार, शहरी केंद्र)

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com